श्रीचक्र का परिचय

'श्री चक्र' की श्रुति (वेदों) द्वारा पुष्टि

शाक्त-मत के अनुभवी विद्वानों और सिद्ध महापुरुषों के अनुसार श्री महा-त्रिपुर-सुन्दरी के नवयोन्यात्मक 'श्री-चक्र' कामराज -विद्या स्वरूप 'श्री यन्त्र' की ब्रह्म -रूप से उपासना करने पर मुक्ति मिलती है ।

'श्री चक्र' की पुष्टि श्रुति द्वारा हुई है । यह कहा जा सकता है कि दर्शनार्थक धातु-घटित श्रुति के आधार पर ही 'श्री चक्र' की रचना हुई है, क्योंकि इसके अनुसार-

यदापश्यः पश्यते रुक्म-वर्णं

कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्म-योनि ।
तदा विद्वान् पुण्य पापे विधूय
निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति।।

इस मन्त्र के **'ब्रह्म-योनि'** पद से योनि का ब्रह्मत्व स्पष्ट रूप से बताया गया है । यहाँ 'योनि' से तात्पर्य नव-योन्यात्मक **‘श्री चक्र'** से ही है । 'ईशम्' पद का सन्धि विच्छेद करने पर **'इ' + 'ईशम्'** का अर्थ राजा या स्वामी है । इसलिये समस्त पद का अर्थ काम राज अथवा काम से सेवित होता है । **'कर्तारं पुरुष'** इन दो पदों से शिव-शक्ति का सम्मिलन व्यक्त होता है।

यदि कोई केवल ‘योनि’ शब्द से ही उसके वेद विरुद्ध होने में शङ्का करे, तो तैत्तरीयारण्यक श्रुति के आधार पर यह शङ्का निर्मूल सिद्ध की जा सकती है । वह श्रुति यह है -

अष्ट-चक्रा नव-द्वारा देवानां पूरयोध्या ।

तस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गो लोको ज्योतिषावृत्तः॥

इसका अर्थ यह है कि १ अष्ट- कोण, २ दश-कोण, ३ द्वितय, ४ चतुर्दश-कोण, ५ अष्ट-पत्र,

६ षोडश-पत्र, ७ त्रि-विलय, ८ त्रि-रेखा आदि आठ चक्रवाली, ९ त्रिकोण-रूप, नौ द्वार-वाली, इन्द्रादिक देवताओं की पूज्या अथवा सोम, सूर्य, अनलात्मक देवताओं की अयोध्या नाम की पुरी है । इसमें हिरण्य-मय कोष अर्थात् सहस्र-दल का कमल है, जिसकी ज्योति से स्वर्ग लोक आच्छादित रहता है ।
'श्रीचक्र-पुरी' का नाम **'अयोध्या'** पड़ने का कारण यह है कि यह पुरी मन्द-भाग्यवाले पुरुष को प्राप्त नहीं होती अथवा 'श्री चक्र' के सेवकों को कामादिक शत्रु पराजित नहीं कर सकते । इस प्रकार अनेक श्रुतियाँ हैं, जो 'श्री चक्र' सम्बन्धी अनुष्ठानादिक का समर्थन करती हैं । उपनिषत् भी **'श्रीचक्र'** के अनुष्ठानादिक का समर्थन करते हैं। उदाहरण के लिये कैवल्योप निषद् का निम्न मन्त्र द्रष्टव्य है

उमा-सहायं परमेश्वरं प्रभुं
त्रि-लोचनं नील-कण्ठं प्रशान्तम्।
ध्यात्वा मुनिर्गच्छति भूत-योनिं
समस्त साक्षीं तमसः परस्तात् ॥

अर्थात् उमा-सहित त्रि-लोचन - लक्षण वाले

भूत-योनि-चक्र का अथवा शिव-शक्ति-सम्मिलन नव-योनि चक्र का, ध्यान योग से, दर्शन कर मुनि-जन अज्ञान के पार पहुँच जाते हैं ।

श्रीचक्र' का माहात्म्य

तत्व-विज्ञान का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि चिद् तथा गति-प्रवाह मूल में एक रूप हैं। वह मूल कहाँ है, यह जानना लगभग असम्भव-सा ही है । अनुमान से इतना कहा जा सकता है कि मूल में प्रकृति-पुरुष भिन्न नहीं हैं। एक ही वस्तु के दो भिन्न प्रवाह हैं। एक ही वस्तु की दो भिन्न क्रियायें हैं । जिस प्रकार एक ही अग्नि तत्व में उष्णता, पृथक्-कारिणी शक्ति, काश आदि भिन्न-भिन्न क्रियायें हैं, उसी प्रकार मूल-चित् में गति तथा चैतन्य - ये दो भिन्न अमोघ शक्तियाँ हैं । उस परमा महा-शक्ति के चैतन्य - भाव को 'शिव' तथा उसके गति - प्रवाह को 'शक्ति' नाम से जाना जाता है । जैसे-जैसे वाह्य-दर्शन के स्थूल अङ्ग के द्रष्टा का भाव अधिक वनने लगता है, वैसे-वैसे ये धारायें अधिकाधिक अन्तरवाली दिखती हैं। जैसे-जैसे अन्तः- सूक्ष्म-लक्ष्य में द्रष्टा प्रवेश

करता है, वैसे-वैसे ये दोनों धारायें समीप दीखने लगती हैं तथा अन्तर एकाग्रता के लक्ष्य में दोनों एक हो गई हुई भासती हैं ।

महा-शक्ति की इस अमोघ माया-मय लीला का सतत चिन्तन करने से व्यक्ति स्थूल बन्धन से मुक्त हो, उसकी सूक्ष्म क्रिया - दर्शन का भाग्यशाली होता है ।

विश्व-प्रवाह में महा शक्ति के इसी क्रिया-भाव का दिग्दर्शक 'श्री चक्र' है । यह सच्चिदानन्द महाशिव का विश्राम स्थान है। इसमें महा-शक्ति की गति-शक्ति 'श्री महा-विद्या' का सतत स्फुरण, स्पन्दन होता है ।

'श्री-चक्र' में महा-शक्ति के चैतन्य - भाव 'शिव' तथा गति-भाव 'शिवा' का एक साथ मानसाराधन सम्भव है। इसमें 'शिव' अपनी शक्ति 'शिवा' से संयुक्त होकर मिथुन रूप में उपासित होता है । यही नहीं, भगवान् शङ्कराचार्य के शब्दों में इसमें शिव-शक्ति का पञ्च-विध साम्य - १ अवस्थान-साम्य, २ अधिष्ठान-साम्य, ३ अनुष्ठान-साम्य, ४ रूप-साम्य

और ५ नाम-साम्य- देखने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

इस प्रकार साधक के लिये 'श्री चक्र' इष्ट देव की साक्षात् मूर्ति है । साधक 'श्री चक्र' के सतत चिन्तन, पूजन द्वारा अपने इष्ट देव से तादात्म्य प्राप्त कर मोक्ष पा सकता है । 'श्री चक्र' का पूजन प्रत्येक शक्ति-उपासक के लिये सर्वश्रेष्ठ साधना है, इसमें सन्देह नहीं ।

योगिनी - हृदय का कथन है कि जिस समय विश्व-रूपिणी परम-शक्ति स्वेच्छा से अपनी स्फुरत्ता का चिन्तन करती है, उसी समय 'श्री चक्र' की उत्पत्ति होती है।'

स्पष्ट है कि 'श्री चक्र' परम शक्ति के बनाये हुए ब्रह्माण्ड और पिण्डाण्ड दोनों का निरूपण करता है; समष्टि तथा व्यष्टि दोनों का द्योतक है । इसीलिये 'श्री-चक्र' का वर्णन दो प्रकार से है । एक तो सृष्टि-क्रम है, जिसमें विन्दु से आरम्भ करके बाहर की ओर चलते हैं । यहाँ विश्व-रूपिणी परम-शक्ति की स्फुरत्ता का दिग्दर्शन होता है। दूसरा लय-क्रम है, जिसमें

बाहर के चक्र से आरम्भ करके अन्दर की ओर चलते हैं । यहाँ 'श्री चक्र' केवल मन होता है, जो शुद्ध सत्व की प्रधानता लिये हुए है । 'श्री-चक्र' का प्रत्येक चक्र तब मानसिक दशा का निरूपण करता है और चक्र-शक्तियाँ मन की वृत्तियों का । भूपुर से लेकर विन्दु-पर्यन्त नौ चक्र जीव की जाग्रत् से लेकर मोक्ष पर्यन्त अनेक दशाओं का वर्णन करते हैं, जो स्वयं उसकी बनाई हुई हैं । ये दशायें ही जीव के लिए शुद्ध या अशुद्ध संसार बनाती हैं । अपवित्र मन से बना हुआ अशुद्ध संसार बन्धन में डालता है और शुद्ध संसार सत्व-गुणाधिकता से सम्पन्न मन द्वारा ज्ञान के अभ्यास का निरूपण करता है । यह अभ्यास ही सभी प्रकार के बन्धनों को काटता है। 'श्री चक्र' की पूजा का यही माहात्म्य है ।

श्रीचक्र' के क्रिया-दैवत

विन्दु - त्रिकोण वसु-कोण दशार-युग्मं,
मन्वस्त्र - नाग-दल- संयुत - षोडशारम् ।
वृत्त त्रयं च धरणी सदन त्रयं च,
श्री-चक्र-राजमुदितं पर देवतायाः ॥

१ विन्दु-

पर व्यापिनी मूल-स्पन्द शक्ति

विन्दु (सर्वानन्द-मय चक्र - परा रहस्य योगिनी) : विश्व-नायिका महा-माया श्री त्रिपुर-सुन्दरी तथा उनके अङ्ग-रूप मूल - षोडश प्रवाह (कलायें) – १ कामेश्वरी, २ भग-मालिनी, ३ नित्य-क्लिन्ना, ४ भेरुण्डा, ५ वह्नि-वासिनी, ६ महा-विद्येश्वरो, ७ शिव-दूती, ८ त्वरिता, ६ कुल-सुन्दरी, १० नित्या, ११ नील-पताकिनी, १२ विजया, १३ सर्व मङ्गला, १४ ज्वाला मालिनी, १५ विचित्रा, १६ त्रिपुर-सुन्दरी । २ त्रिकोण - श्री महा-विद्या (इच्छा, ज्ञान, क्रिया)।

३.त्रिकोण

(सर्व-सिद्धि-प्रद चक्र-अतिरहस्य- योगिनी) :

अति रहस्य- योगिनी-त्रय - १ कामेश्वरी ' (रुद्र), २ वज्रेश्वरी (विष्णु), ३ भग-मालिनी (ब्रह्मा)।

३ अष्ट-कोण (वसु-कोण) -

अष्ट-पीठ की महा-शक्तियाँ

अष्ट-कोण (सर्वरोगहरचक्र रहस्ययोगिनी) :

अष्ट-काल- शक्तियाँ - १ वशिनी, २ कौमारी, ३ मोहिनी, ४ विमला, ५ अरुणा, ६ जयिनी, ७ सर्वेशी तथा ८ कौलिनी । 8 अन्तर्दशार - दश महाविद्यायें ।

४.अन्तर्दशार (सर्व-रक्षाकर चक्र - निगर्भ - योगिनी) :

मूल- सत्व-भाव-दर्शिका दश धात्री शक्तियाँ - १ सर्वज्ञा, २ सर्व शक्ति, ३ सर्वेश्वर्य- फल प्रदा, ४ सर्व ज्ञानमयी ५ सर्व-व्याधि - नाशिनी, ६ सर्वाधारस्वरूपा, ७ सर्व-पाप-हरा, ८ सर्वानन्द-मयी, ६ सर्व रक्षाकरी, १० सर्वेप्सितार्थ - फलदा।

५. बहिर्दशार - (सर्वार्थ-साधक-चक्र - कुलयोगिनी) :

महाशून्य की दश दिशायें, जिनमें दश महाविद्याओं को भिन्न-भिन्न क्रियाशक्तियों का विकास होता है । (इन द्वारों में से, वे शक्तियाँ बाहर की ओर प्रस्सरित होती हैं) ।

महा-माया-मयी दश सिद्धियाँ -

१ सर्व-सिद्धिप्रदा, २ सर्व-सम्पत्-प्रदा, ३ सर्व-

प्रियङ्करी, ४ सर्व मङ्गल-कारिणी, ५ सर्व-काम-प्रदा, ६ सर्व-दु:ख-मोचिनी, ७ सर्व-मृत्यु -प्रशमिनी, ८ सर्व- विघ्न- निवारिणी, ६ सर्वाङ्ग-सुन्दरी, १० सर्व-सौभाग्य-प्रदा । ५

६. चतुर्दश त्रिकोण (मन्वस्र) -

चतुर्दश सृष्टि क्रम

पञ्च - सूक्ष्माकर्षण विन्दु (द्रां, द्रीं क्लीं, ब्लूं, सः) +पञ्च तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध) + अन्तश्चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार) = १४।

चतुर्दशार (सर्व-सौभाग्य-प्रदचक्र सम्प्रदाययोगिनी):

मूलाग्नि की ७ लय-कारिणी तथा ७ उन्मादिनी शक्तियाँ-

(क) लय-कारिणी - १ सर्व-संक्षोभिणी, २ सर्व-द्राविणी, ३ सर्वाकर्षिणी, ४ सर्वाह्लादकरी, ५ सर्व-सम्मोहिनी, ६ सर्व-स्तम्भिनी, ७ सर्व-जृम्भिणी ।

(ख) उन्मादिनी - १ सर्ववशङ्करी, २ सर्वरञ्जिनी, ३ सर्वोन्मादिनी, ४ सर्वार्थसाधिनी, ५ सर्व-सम्पत्ति-पूरिणी, ६ सर्व-मन्त्र-मयी, ७ सर्वद्वन्द्व -क्षयङ्करी।

७ अष्ट-दल - (नाग-दल) -

काल-चक्र भैरवी-शक्ति

अष्ट-दल (सर्व-संक्षोभण-चक्र -गुप्ततर योगिनी):

मूल जल तत्व को ४ मोहिनी तथा ४ आकर्षिणी शक्तियाँ –
(क) मोहिनी - १ अनङ्ग - कुसुमा, २ अनङ्ग-मेखला, ३ अनङ्ग-मदना, ४ अनङ्ग-मदनातुरा ।
(ख) आकर्षिणी–१ अनङ्ग - रेखा, २ अनङ्ग-वेगा ३ अनङ्गांकुशा, ४ अनङ्ग-मालिनी | १ }

८.षोडश-दलषोडश कला (सृष्टिका उन्नतिक्रम)

षोडश-दल (सर्वाशा-पूरकचक्र - गुप्तयोगिनी) :

मूल वायु तत्व की वशीकरिणी, स्तम्भिनी, उच्चाटिनी तथा विक्षेपिणी महाशक्तियाँ -
(क)वशीकरणी- १ कामाकर्षिणी, २ बुद्ध्याकर्षिणी, ३ अहङ्काराकर्षिणी ४ शब्दाकर्षिणी ।
(ख)स्तम्भिनी- १ स्पर्शाकर्षिणी, २ रूपाकर्षिणी, ३ रसाकर्षिणी, ४ गन्धाकर्षिणी
(ग)उच्चाटिनी- १ चित्ता-कर्षिणी, २ धैर्याकर्षिणी,

३ स्मृत्याकर्षिणी, ४ आत्माकर्षिणी।
(घ)विक्षेपिणी- १ शरीराकर्षिणी, २ अमृताकर्षिणी, ३ स्मृत्याकर्षिणी, ४ आत्माकर्षिणी ।

९.भूपुर (धरणी-सदन) -
अनन्त ब्रह्माण्डात्मक बाह्य सृष्टि

त्रिवृत्त - उत्पत्ति, स्थिति, लयात्मक सृष्टि क्रम।

चतुर्द्वार- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

भूपुर-त्रय

(त्रैलोक्यमोहनचक्र - प्रगटयोगिनी):

बाहर के भूपुर में भू-तत्व-जनित अणिमादि अष्ट-सिद्धियाँ | बीच के भूपुर में अणिमादि अष्ट-सिद्धियों में (लुभानेवाली) कार्य-कर्ती अष्ट महाशक्तियाँ
१ ब्राह्मी, २ माहेश्वरी, ३ कौमारी, ४ वैष्णवी, ५ इन्द्राणी, ६ वाराही, ७ चामुण्डा, ८ नारसिंही ।

अन्दर के भूपुर में ब्राह्मी आदि अष्ट-शक्तियों के क्षोषण, द्रावणादि गुप्तास्त्र हैं।

'श्री चक्र' में 'विन्दु' – मूल स्पन्द शक्ति भगवती महा-दुर्गा मां का परम भाव है।

'त्रिकोण' श्री-है

'वसु-कोण' में श्री का तेज है।

'दशार' में भगवान् कृष्ण (मूल सत्व - गुण - ज्ञानशक्ति : भगवान् महा-विष्णु) और भगवान् शिव (मूल तमो गुण-- क्रिया - शक्ति : भगवान् महा-रुद्र) समत्वभाव में विराजमान हैं ।

'चतुर्दश- मन्वार' दश महाविद्याएँ और जीवन की चार अवस्थाएँ - १ जाग्रत्, २ स्वप्न, ३ सुषुप्ति और ४ तुरीय- ये चौदह भाव बताता है। जाग्रत् में अहङ्कार द्वारा क्रिया होती है । स्वप्न में मन की क्रिया होती है । सुषुप्ति में बुद्धि की क्रिया है और तुरीय अवस्था में चित्त की क्रिया समाई हुई है। इस प्रकार **'श्रीचक्र'** में विलक्षण क्रियादैवत समाये हैं, जो सतत

चिन्तन-पूजन का विषय है।